परिवार : प्रकार एवं उत्पत्ति के सिद्धांत

परिवार (Family) → भारतीय सामाजिक संरचना की एक विशेषता के रूप में यहाँ संयुक्त परिवार का प्राचीन काल से ही महत्व रहा है। हिंदुओं के अलावा अहिन्दू लोगों में भी संयुक्त प्रकार की पारिवारिक व्यवस्था पायी जाती रही है। सामान्यतः संयुक्त परिवार हिन्दुओं का विशिष्ट लक्षण माना जाता है। वास्तव में यह भारतवर्ष में सर्वत्र ही प्रचलित है क्योंकि यह हिंदुओं की भांति अनेक अहिन्दू समुदायों में भी पाया जाता है वह पारिवारिक संगठन जिसका हम यहाँ वर्णन करना चाहते हैं कुछ समुदायों में पितृसत्तात्मक है तथा अन्य में मातृ-सत्तात्मक अथवा मातृ-वंशीय है। भारत में परिवार का पारंपरिक स्वरूप संयुक्त परिवार रहा है ऐसा हिन्दुओं की कुछ पवित्र पुस्तकों में उल्लेखनीय है तथा सदियों पुरानी इस भूमि पर यह स्वरूप प्रचलित रहा है। भारतीयों के लिए परिवार का वही अर्थ है जो अंग्रेजी के "जाइंट फैमली (Joint family) से लिया जाता है नकि परिवार भारतीय अवधारणा नहीं है। कर्वे का मत है कि " यहाँ (भारत मे) परिवार का अर्थ संयुक्त परिवार से ही है"। भारतीय दर्शन, अर्थव्यवस्था, जाति प्रथा, वर्णाश्रम व्यवस्था यहाँ के सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं उन सभी में परिवार एक महत्वपूर्ण संस्था है यह हिंदू संस्कृति का संचालक सूत्र रहा है हिन्दुओं में विवाह एवं परिवार को धर्म का अंग माना गया है गृहस्थ आश्रम सभी आश्रमों का मूल कहा गया है हमारे धर्मशास्त्रों मे जहाँ एक ओर संयासी जीवन एवं संसार त्याग की बात कही गयी है, वहीं गृहस्थ जीवन की उपयोगिता के भी गुणगान किये गये है वैदिक काल

से लेकर अब तक भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली रही है, चाहे इसके फलस्वरूप और संरचना में परिवर्तन आते रहे हों। इसका उदाहरण है पितृ पूजा। अग्नि पूजा के साथ पितरों का भी आह्वान किया जाता है तथा उन्हीं श्रद्धा, दान एवं अन्न की याचना की जाती है। पितृ पूजा ने परिवार के सदस्यों को एक सामान्य स्थल पर मिलने का अवसर दिया है। ये भूमि एवं पूर्वजों से जुड़े रहते हैं। वैदिक युग में कृषि ही महत्वपूर्ण व्यवसाय था और इस कार्य को करने के लिए अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता होती थी जिसे परिवार के संयुक्त रूप ने ही निभाया। प्राचीन वैदिक परिवार पितृ स्थानीय पितृवंशीय एवं पितृ-सत्तात्मक होते थे। मैक्स मूलर ने संयुक्त परिवार को भारत की 'आदि परम्परा' कहा है जो भारतीयों को वर्षों से सामाजिक परम्परा के रूप में मिलता है। पणिक्कर ने कहा है कि सैद्धान्तिक रूप से असंबंधित होते हुए भी ये दोनों संस्थाएँ जाति और संयुक्त परिवार व्यावहारिक रूप में एक दूसरे से इस प्रकार गुंथी हुई हैं कि वे सामान्य संस्था हो गयी हैं। हिन्दू समाज की इकाई व्यक्ति न होकर संयुक्त परिवार है। इरावती कर्वे का भी मानना है कि यदि हम भारत में किसी भी सांस्कृतिक तथ्य को समझना चाहते हैं तो तीन बातों का ज्ञान आवश्यक है ये हैं भाषायी क्षेत्र की संरचना, जाति संस्था और पारिवारिक संगठन। इन तीनों कारकों में से प्रत्येक दूसरे दो से घनिष्ठ रूप से संबंधित है। तथा तीनों मिलकर ही भारतीय संस्कृति के अन्य सभी तत्वों को आधार प्रदान करते हैं एवं अर्थपूर्ण बनाते हैं।

परिवार मानव की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। यह समाज की आधारशिला है समाज में जितने भी छोटे-छोटे संगठन हैं उनमें परिवार का महत्व सबसे अधिक है, यह मानव की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति से संबंधित है। परिवार

के सदस्यों के बीच बन्धन बड़े व्यापक और दृढ़ होते है।

परिवार का अर्थ एवं परिभाषाएँ :—

परिवार व्यक्तियों का अपेक्षाकृत स्थायी एवं स्थायी समूह है जो विवाह तथा रक्त संबंधो पर आधारित होता है जिसके सदस्यों मे प्राथमिक संबंध होते है। और जो जीवन की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति से जुड़े होते है

~~मैकाइ~~ परिभाषा —

1. मैकाइवर एवं पेज ने लिखा है, "यौन संबंधो से परिभाषित एक समूह को परिवार कहते है जिसमें कि ये संबंध बच्चों की उत्पत्ति और पालन-पोषण के लिए पर्याप्त रूप से निश्चित और स्थायी है।"

इन परिभाषा से तीन बाते स्पष्ट होती है — (i) परिवार का समूह है, (ii) इसकी संरचना निश्चित और स्थायी होती है। (iii) इसके तीन मुख्य कार्य है — क) यौन संबंध ख) बच्चों का जन्म (ग) उनका लालन पालन

बर्गेस एवं लॉक के अनुसार, " परिवार व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जो विवाह रक्त या गोद संबंधो द्वारा बँधे होते है एक गृहस्थी का निर्माण करते है जिसमें पति और पत्नि, माता और पिता, पुत्र और पुत्री, भाई और बहन अपनी सामाजिक भूमिकाओं का सन्दर्भ में एक दूसरे से अन्त क्रिया और अन्त: संचार करते है और एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते है

ऑगबर्न और निमकॉफ के शब्दों मे परिवार बच्चो या बिना बच्चों वाले पति पत्नि या

Page No. 4
Date / 201

किसी पुरुष या स्त्री में से एक के साथ रहने वाले बच्चों की थोड़ा बहुत स्थायी सामिति है।

अतः एक सामान्य निष्कर्ष किया जा सकता है कि परिवार व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जो विवाह और रक्त संबंधों पर आधारित है इसके सदस्य एक दूसरे से अन्तः क्रिया करते हुए जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते है।

परिवार की विशेषताएँ — परिवार को और अधिक स्पष्ट रूप में समझने के लिए उनकी विशेषताओं को देखना होगा मैकाइवर एवं पेज ने इनकी विशेषताओं को दो भागों में बाँटा है।
(I) सामान्य विशेषताएँ (II) विशिष्ट विशेषताएँ

I परिवार की सामान्य विशेषताएँ :—

1. वैवाहिक संबंधों के रूप — विवाह संबंध के माध्यम से ही एक स्त्री-पुरुष परिवार का निर्माण करते हैं पति-पत्नी के ये संबंध जीवन भर के लिए या अपेक्षाकृत कम अवधि के लिए हो सकते हैं विवाह संबंध के अनेक रूप अनेक समाजों में देखे जाते हैं किसी समाज में एक विवाह प्रथा का प्रचलन है तो अनेक समाजों में बहुपति प्रथा या बहुपत्नि प्रथा के रूप देखे जाते हैं यह एक या दो आदिम समाजों में समूह विवाह का रूप देखा जा सकता है। कहीं एक समाज एक से अधिक रूपों को स्वीकार कर सकता है।

2. जीवन साथियों का चुनाव — पतियों या पत्नियों का चुनाव माता-पिता या

अन्य सभी लोग या सम्बंधित व्यक्ति अपनी इच्छा से बहिर्विवाह करते है। साथ ही अन्तर्समूह विवाह या बहिर्विवाह के प्रतिबन्धों के कुछ रूप सभी जगह पाये जाते है। किन्तु संबन्धो के कुछ रूप ऐसे है जिनके अन्तर्गत एक व्यक्ति को विवाह करना मना होता है।

3. वंश गणना — परिवार वंशगणना या वंशनाम से संबंधित होती है यह वंशनाम पुरुषों के पक्ष से हो सकती है जिसे पितृवंशीय कहते है। यह स्त्रियों के पक्ष से हो सकती है जिसे मातृ-वंशीय कहते है। ये दोनो व्यवस्थाएँ अच्छी तरह उपयोग में है।

4. परिवार वृत का रूप — परिवार का एक निवास-स्थान होता है यह निवास-स्थान भिन्न-भिन्न होता है। जब पत्नि विवाह के बाद पति के संबंधियों के निवास स्थान मे सम्मिलित होती है तो इसे पितृ-स्थानीय कहा जाता है इसके विपरित जब पति, पत्नी से संबंधियो में सम्मिलित होता है तो इसे मातृ-स्थानीय कहा जाता है।

मैकाईवर एवं पेज का कहना है कि ऐसे भी उदाहरण है जहाँ पितृ-स्थानीय और मातृ स्थानीय निवास स्थानों में प्रति-वर्ष परिवर्तन होते रहते है आज के जमाने में ऐसा भी होता है कि विवाही दम्पति अपने एक नये निवास मे रहते है। दुबे ने इसे नव स्थानीय कहा है।

II परिवार की विशिष्ट विशेषताएँ: मैकाईवर एवं पेजने परिवार की 8 प्रमुख विशिष्ट विशेषताओं का उल्लेख किया है। वे ऐसी

विशेषताएं है जिसके आधार पर परिवार अन्य संगठन या संघ से अनेक रूपों में अलग किया जा सकता है। ये विशेषताएं प्रमुख है।

1. सार्वभौमिकता :- परिवार सबसे अधिक सार्वभौमिक है, यह सभी समाजों में और सभी कालों में पाया जाता है इसका मूल कारण यह है कि समाज द्वारा स्वीकृत यौन संबंध, प्रजनन तथा बच्चों का लालन-पालन, सामाजिक स्तर तथा सुरक्षा जैसी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार द्वारा ही होती है। अतः प्रायः प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी परिवार का सदस्य रहा है या है।

2. भावनात्मक आधार ; परिवार के निर्माण का आधार भावना है पति-पत्नि के संबंध, सन्तानोत्पत्ति, मातृ-निष्ठा एवं पिता की सावधानी आदि जैसी मूल प्रवृत्तियाँ परिवार मे पाई जाती है साथ ही पति-पत्नी के रोमांसपूर्ण प्रेम, सुरक्षा की इच्छा, पारस्परिक सहयोग स्नेह एवं त्याग के लिए गर्व आदि गुण पाये जाते है परिवार इन्ही प्रवृतियों व भावनाओं पर आधारित व्यवस्था है।

3. निर्माणात्मक प्रभाव ; मानव व्यक्ति के निर्माण मे सबसे अधिक प्रभाव परिवार का होता है। यह मनुष्य का प्रथम सामाजिक पर्यावरण है उसके व्यवहार मनोवृत्ति आदत एवं क्रिया कलापो आदि पर परिवार की छाप होती है। यह मनुष्य की जैविकीय और मानसिक आदतो को प्रभावित कर ~~आदतो को~~ उसके चरित्र का निर्माण करता है।

4. सीमित आकार :- परिवार सामाजिक संरचना की सबसे छोटी

Page No 7
Date / 201

इकाई है इसका बहुत सीमित आकार होता है। इसके सदस्य मूल रूप में पति, पत्नी, सन्तान और निकट के सम्बन्धी होते हैं। अतः निसन्देह अन्य समूहों व संगठनों की तुलना में परिवार का आकार सीमित है।

5. सामाजिक संरचना में केन्द्रीय स्थिति :- सामाजिक संरचना के निर्माण की अनेक इकाइयाँ है, उनमें परिवार की स्थिति केन्द्रीय है यह विभिन्न रूपों में अपने केन्द्रीय महत्व को साबित करता है। प्रथम, यह मानव जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करता है दूसरा, यह वह केन्द्र स्थल है जहाँ से अनेक समूहों का जन्म व विकास हुआ। तीसरा, सरल समाजों में परिवार की इकाइयों से ही पूरी सामाजिक संरचना का निर्माण होता है। चौथा, मानव को सामाजिक प्राणी बनाने में परिवार की भूमिका अद्वितीय है इसी तरह अन्य अनेक ऐसे कारण है जो परिवार को केन्द्रीय स्थिति प्रदान करते हैं।

6. सदस्यों का उत्तरदायित्व – परिवार अपने सदस्यों को अधिक उत्तरदायित्वों को वहन करने के लिए प्रेरित करता है। परिवार का जीवन ऐसी मौलिक भावनाओं – सहयोग, मातृनिष्ठा, पिता की सावधानी एवं स्नेह आदि – से भरा-पूरा होता है कि इसके उत्तरदायित्व की कोई सीमा नहीं होती। व्यक्ति पूरा जीवन परिवार हेतु कार्य करता है और किस सीमा तक अपने उत्तरदायित्व का वहन करता है कल्पना भी नहीं की जा सकती।

7. सामाजिक नियमन – परिवार का संगठन नैतिक नियमों और सामाजिक निषेधों के द्वारा नियंत्रित होता है। विवाह द्वारा परिवार का निर्माण

होता है। प्रत्येक समाज में विवाह-संबंधी - रीति-रिवाज एवं कानून होते है इन्हे नव-दम्पति को मानना पड़ता है ये सामाजिक नियमन परिवार को सुरक्षा प्रदान करते है।

8. स्थायी और अस्थायी स्वभाव :- परिवार को यदि नियमों एवं कार्य प्रणालियो की व्यवस्था के रूप मे देखे, तो यह संस्था है। इस रूप में परिवार का स्वभाव स्थायी है क्योंकि यह प्रणाली हमेशा चलती रहती है। किन्तु यदि परिवार को पति, पत्नी बच्चों तथा निकट संबंधियों का एक संगठन के रूप में देखे, तो यह समिति है। इस रूप मे इसका स्वभाव अत्यधिक अस्थायी है इसका कारण यह है कि विवाह-विच्छेद, जन्म व मृत्यु आदि के द्वारा उसके रूप में परिवर्तन हो जाता है।

परिवार का प्रकार :- परिवार सबसे अधिक सार्वभौम है यह सभी समाजों में और सभी कालों में पाया जाता है परन्तु इसके भिन्न भिन्न रूप देखने को मिलते है न केवल अनेक समाजों में इसके रूप अनेक है बल्कि एक समाज में भी परिवार के अनेक रूप है भारतीय समाज के संदर्भ में विद्वानों मे अनेक आधारों पर परिवार के प्रकारो को स्पष्ट किया है प्रमुख निम्न प्रकार है —

(I) आकार, संगठन और संरचना के आधार पर परिवार को चार भागों में बाँटा गया है? —

1. एकांकी परिवार :- यह परिवार का सबसे छोटा रूप है, इसकी संरचना पति-पत्नि एवं आश्रित बच्चों की होती है जब बच्चे बालिग हो जाते है तो वे अलग परिवार का निर्माण करते है आधुनिक समाजों में इसका प्रचलन अधिक है। 'हो' जनजाति मे भी यह

पाया जाता है।

2. संयुक्त परिवार :- यह परिवार का वह रूप है जिसमे कम से कम तीन पीढ़ियों के लोगो का समान निवास हो एक रसोई हो, एक आर्थिक इकाई हो, सामान्य पूजा मे भाग लेते हो और परस्पर रक्त संबंधो से बंधे हो। ऐसे परिवार की सर्वोच्च सत्ता एक मुखिया मे केंद्रित होती है भारतीय समाज में यह अधिक पाया जाता है। मालवार के नायरो में भी इसका प्रचलन है।

3. विस्तृत परिवार :- यह परिवार का वह रूप है जिसमे कई परिवार एक वंशक्रम से संबंधित होते है किंतु निवास के रूप मे उनमे कुछ परिवार अलग अलग इकाई मे बँटे रहते है कहने का तात्पर्य यह है कि इसके अंतर्गत विभिन्न पीढ़ियो के परिवार आ जाते है जिनमें कुछ निकट पीढ़ी वाले एक निवास एवं एक आर्थिक इकाई में भी रह सकते है कुछ पृथक इकाई के रूप मे बँटे होते है किंतु एक वंशानुक्रम की भावना उन्हे एक सूत्र में बाँधे रहती है। इसका प्रचलन अफ्रीकी समाजो मे देखा जाता है।

4. मिश्रित परिवार :→ यह परिवार का वह रूप है जिनकी संरचना एकाकी परिवार की है किंतु मानसिक रूप में संयुक्त परिवार से जुड़े होते है। भारतीय नगरो मे ऐसे परिवार की संख्या बढ़ रही है। सैद्धांतिक रूप मे ये परिवार संयुक्त या विस्तृत परिवार की इकाई होती है परन्तु व्यवहारिक रूप से वह एक एकाकी परिवार के रूप मे कार्य करता है। मानसिक रूप मे वे परिवार से जुड़े होने के कारण विवाह, मृत्यु या अन्य कार्यक्रमो मे भाग ले लेते है यहाँ भाग लेना प्राय: औपचारिक ही होता है।

II. विवाह के स्वरूपों के आधार पर परिवार के रूपों की चर्चा की जाती है ये निम्न प्रकार है –

1. एकविवाही परिवार :→ यह परिवार का वह रूप है जिसका निर्माण एक पुरुष और एक स्त्री के वैवाहिक संबंध द्वारा होता है। भारत व विश्व के अन्य समाजों में भी परिवार का यह रूप अधिक प्रचलित है। भारत की जनजातियों, खासी, संथाल, कादर और हो में इसका प्रचलन है।

2. बहुविवाही परिवार :– यह परिवार का वह रूप है जिसका निर्माण एक से अधिक स्त्री या पुरुष के वैवाहिक सम्बन्धों से होता है इसके अनेक रूप देखे जाते हैं –

(i) बहुपत्नी विवाही परिवार :– यह परिवार का वह रूप है जिसका निर्माण एक पुरुष का एक से अधिक स्त्रियों से वैवाहिक संबन्ध द्वारा होता है। इस तरह के परिवार में पति एक और पत्नियाँ कई होती है, परिवार की सत्ता पुरुष व पति के हाथों होता है। हिन्दू समाज में इसका प्रचलन था, परन्तु अब कम है। मुस्लिम समाज में अभी भी इसे सामाजिक व कानूनी मान्यता है।

(ii) बहुपति विवाही परिवार :– यह परिवार का वह रूप है जिसका निर्माण एक स्त्री का एक से अधिक पुरुषों से वैवाहिक संबंध द्वारा होता है। इस तरह के परिवार में पत्नी एक और पति कई होते हैं परिवार की सत्ता स्त्री व पत्नी के हाथों होती है। भारत की टोडा, खस एवं मंमक्कवास मालाबार की नायर आदि जनजातियों में इसका प्रचलन है। इसके भी दो रूप हैं – जब स्त्री के पति

Page No 11
Date / 201

भाई-भाई हो, तो ऐसे परिवार को भ्रातृ बहुपति विवाह परिवार कहा जाता है। किन्तु जब स्त्री के पति आपस में भाई-भाई न तो ऐसे परिवार को अभ्रातृ बहुपति विवाही परिवार कहते हैं।

(iii) समूह विवाही परिवार :— यह परिवार का वह रूप है जिसका निर्माण कई स्त्री का कई पुरुषों से वैवाहिक सम्बंध होता है। इस तरह के परिवार में कई पत्नियाँ और कई पति आपस में एक-दूसरे से संबंधित होते हैं परिवार का यह ही आदिम समाजों में देखा जा सकता है।

III सत्ता, वंशनाम, निवास और उत्तराधिकारी के आधार पर परिवार को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा जाता है—

(i) पितृसत्तात्मक परिवार :— यह परिवार का वह रूप है जहाँ परिवार की सत्ता, वंशनाम, निवास और उत्तराधिकार पुरुष व पिता से संबंधित हो। पितृसत्तात्मक शब्द से ही पिता के पूर्ण अधिकार का संकेत मिलता है इस तरह के परिवर्तन पिता की पूर्ण सत्ता व अधिकार होता है वंश-नाम पिता की ओर से चलता है विवाह के बाद पत्नी पति के घर निवास करती है और पिता के बाद परिवार का उत्तराधिकारी पुत्र या पुरुष सदस्य होता है। सम्पति पर पिता के बाद पुत्र का अधिकांश अधिकार होता है इस प्रकार यह परिवार चार नामों से जाना जाता है — पितृसत्तात्मक, पितृवंशीय, पितृस्थानीय तथा पितृमार्गी परिवार। अधिकांश समाजों में इसका प्रचलन है।

(ii) मातृसत्तात्मक परिवार :— यह परिवार का वह रूप है जहाँ परिवार की सत्ता, वंशनाम, निवास और उत्तराधिकार माता या स्त्री से संबंधित हो। मातृसत्तात्मक

Page No. 12
Date / 201

जहाँ से माता या पत्नी के पूर्ण अधिकार का संकेत मिलता है इस तरह के परिवार में माता का अधिकार होता है। वंशनाम माता से चलता है, विवाह के बाद पति पत्नी के घर निवास करता है और उत्तराधिकार मातृपक्ष से निर्धारित होता है। सम्पत्ति पर पुत्र का या मातृपक्ष के पुरुषों का अधिकार होता है। इस प्रकार यह परिवार मातृसत्तात्मक, मातृवंशीय, मातृस्थानीय और मातृमार्गी के नाम से जाना जाता है। भारत की खासी, गारो, खासी एवं मालाबार के नैयर आदि में इसका प्रचलन है।

(IV) जन्म व प्रजनन के आधार पर डेविस ने परिवार के दो रूपों की चर्चा की है —

(i) जन्म-मूलक परिवार — यह परिवार का वह रूप है जिसमें व्यक्ति जन्म लेता है, और सामाजिक नियमों को सीखता है।

(ii) प्रजनन-मूलक परिवार :- यह परिवार का वह रूप है जिसमें व्यक्ति बच्चों को जन्म देता है, उसका लालन-पालन करता है और उसे सामाजिक नियमों से अवगत कराता है।

(V) संबंध के आधार पर गिलिन ने परिवार के दो रूपों की चर्चा की है —

(i) सामान्य परिवार - यह परिवार का वह रूप है जिसका निर्माण एक ही खून व रक्त के व्यक्तियों के द्वारा होता है।

(ii) विवाह-सम्बंधी परिवार :- यह परिवार का वह रूप है जिसका निर्माण पति-पत्नी उनके बच्चों और विवाह से संबंधित कुछ रिश्तेदार आदि के द्वारा होता है। खरिया जनजाति में इसका प्रचलन है।

Page No 13
Date / 201

इस प्रकार विभिन्न आधारों पर परिवार के अनेक प्रकार देखे जाते है।

परिवार के प्रकार्य या महत्व (Functions or Importance of Family) → परिवार समाज की आधारभूत एवं महत्वपूर्ण इकाई है। एक जैविकीय प्राणी को सामाजिक मे परिवार करने में इसकी भूमिका अद्वितीय है यह सबसे पहली सामाजिक इकाई है जिससे नवजात शिशु का साक्षात्कार होता है। इसके माध्यम से शिशु सामाजिकता की जानकारी प्राप्त करते हुए स्वस्थ मानव के रूप में परिणात होता है। इस संदर्भ में परिवार अनेक प्रकार्यों को करता है। प्रमुख निम्न प्रकार है

1. जैविकीय प्रकार्य :→ परिवार का यह प्रकार्य व्यक्ति व समाज दोनो ही रूपों मे महत्वपूर्ण है। जैविकीय रूप में परिवार तीन प्रमुख कार्यों को करता है — (i) यौन इच्छा की संतुष्टि (ii) बच्चों को जन्म देना और (iii) उनका पालन - पोषण करना। यौन इच्छा मानव का स्वाभाविक गुण है। परिवार मानव की इस इच्छा की पूर्ति नियमित रूप मे विवाह के माध्यम से करता है। पति पत्नि के यौन इच्छा की पूर्ति के संदर्भ में बच्चों का जन्म होता है जिसे समाज वैध रूप प्रदान करता है फिर उस नवजात शिशु का पालन पोषण परिवार द्वारा होता है।

2. सामाजिक प्रकार्य :- परिवार का यह प्रकार्य विशेष महत्वपूर्ण है इस कार्य को परिवार तीन रूपों में करता है। (i) समूहीकरण के साधन, (ii) सामाजिक नियन्त्रण के साधन और (iii) प्रस्थिति का निर्धारण। समाजीकरण के माध्यम से परिवार बच्चों को समाज के

Page No. 14
Date / 201

अनुकूल बनाता है। रहन-सहन, खान-पान, बोलचाल की भाषा अभिजाहन के ढंग एवं क्रियाकलाप के ढंग आदि सब कुछ परिवार से मिलता है समाज में परिवार व्यक्ति को सामाजिक व्यक्ति बनता है परिवार हमारे आचरण पर नियन्त्रण भी रखता है ताकि हम समाज के विपरित कार्य न करें। साथ ही परिवार व्यक्ति को एक निश्चित प्रस्थिति प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति में अपने कर्तव्य का बोध होता है। यह बोध व्यक्ति को समाज के अनुकूल बनाता है।

(3) आर्थिक प्रकार्य :→ परिवार एक आर्थिक इकाई भी है, इस रूप में परिवार प्रमुख कार्यों को करता है (i) आर्थिक सुरक्षा (ii) उत्पादन कार्य (iii) संपत्ति अर्जन एवं संग्रह और (iv) श्रम विभाजन। परिवार ही सर्वप्रथम नवजात-शिशु को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। इस हेतु वह उत्पादन करता है ताकि शिशु का उचित भरण पोषण हो और वह इतना कुशल हो जाय की समुचित जीवन-यापन के लिए संघर्ष कर सके। साथ ही परिवार सम्पत्ति अर्जन और संग्रह का माध्यम है यह सम्पत्ति मकान जमीन एवं अभूषण आदि के रूप में होता है जिस पर पूरे परिवार का स्वामित्व होता है परिवार व्यवस्था श्रम-विभाजन पर आधारित है। स्त्री-पुरुष एवं बच्चों के कार्य अलग अलग होते हैं इस प्रकार परिवार में कार्यों का बँटवारा होता है।

4. मनोवैज्ञानिक प्रकार्य :- परिवार का यह कार्य मानसिक सुख व शांति से संबंधित है। मानव एक भावुक प्राणी है उसे स्नेह चाहिए, सहानुभूति चाहिए, अपनापन चाहिए सुख-दुःख का सहभागी चाहिए ताकि दुःखी मन को शांति मिले। जन्म से लेकर मृत्यु तक उसको

उथल-पुथल होते रहते है ऐसे में मानव मन कभी-कभी काफी टूट जाता है, लेकिन परिवार व्यक्ति को स्नेह व सहानुभूति आदि के माध्यम से मजबूत बनाता है और उसे जीने की प्रेरणा प्रदान करता है समाजशास्त्रीय अध्ययनो से यह सिद्ध हो गया है कि परिवार इस मनोवैज्ञानिक प्रकार्य को कुशलता के साथ सम्पन्न करता है।

5. संस्कृतिक एवं धार्मिक प्रकार्य:- संस्कृति एवं धर्म का पहला पाठ व्यक्ति परिवार से प्राप्त करता है इसके माध्यम से प्रत्येक पीढी को अपनी अपनी संस्कृति एवं धर्म का परिचय मिलता है, इससे एक तरफ संस्कृति व धर्म की रक्षा होती है तो दूसरी तरफ इसका एक पीढी से दूसरी पीढी को हस्तान्तरण होती है परिवार के परिवेश में ही व्यक्ति संस्कृति व धार्मिक परम्परा, रीति-रिवाज, संस्कार, पूजा-पाठ एवं पर्व त्योहार आदि में भाग लेते है यही कारण है कि जिस परिवार की जैसी संस्कृति व धर्म होता है उसी के अनुसार व्यक्ति की सोच एवं व्यवहार बनता है

6. मनोरंजनात्मक प्रकार्य :→ परिवार स्वस्थ मनोरंजन का केंद्र स्थल है बच्चों की प्यारी-प्यारी बोली हँसना-हँसना बच्चों का परस्परिक झगड़ा, दाम्पत्य प्रेम व रोमांस एव कथा-कहानी आदि मनोरंजन प्रदान करते है परिवार में मनाया जाने वाला पर्व त्योहार, धार्मिक क्रिया-कलाप एवं विवाह-उत्सव आदि भी मनोरंजन के साधन है आधुनिक समाज में जब से घरो में टेलीविजन का आगमन हुआ है तब से परिवार आधुनिक मनोरंजन का केन्द्र बन गया है

7. शैक्षणिक प्रकार्य:- परिवार बच्चों का प्रथम विद्यालय है, परिवार के परिवेश मे बच्चा दया, प्रेम

अपनापन, दया, आज्ञापालन, कर्तव्यनिष्ठा एवं परोपकार आदि जैसे गुणों की शिक्षा प्राप्त करता है। यह शिक्षा बच्चा एक दूसरे के प्रति व्यवहार के क्रम में प्रतिदिन के जीवन में प्राप्त करता है। इसलिए इसका शिशु मन पर ज्यादा प्रभाव पड़ता है यह पारिवारिक शिक्षा जीवन की आधार प्रदान करती है।

8. राजनीतिक प्रकार्य :- परिवार राजनीतिक क्रिया-कलापों का भी केंद्र है। एक तरफ यह राज्य व देश के प्रति व्यक्ति के कर्तव्य को स्पष्ट करता है तथा राज्य व देश की प्रमुख नियमों से अवगत करता है तो दूसरी तरफ राजनीतिक व्यवहार को भी निर्देशित करता है तो दूसरी तरफ राजनीतिक व्यवहार को भी निर्देशित करता है चुनाव काल मे ऐसा देखा जाता है कि एक परिवार के सभी मताधिकारी प्रायः एक ही उम्मीदवार को वोट डालते हैं। यह वोट देने की क्रिया पारिवारिक निर्णय पर आधारित होती है साथ ही यदि परिवार के कोई सदस्य राजनीतिक में पूर्णतः लगे होते हैं, तो परिवार के अन्य सदस्य भी मदद करते है।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णन से पता चलता है कि परिवार व्यक्ति व समाज के प्रति महत्वपूर्ण प्रकार्यों को सम्पादित करता है इसलिए इसे प्राथमिक एवं मौलिक इकाई कहा जाता है।

परिवर्तन म

परिवार मे परिवर्तन (CHANGES IN FAMILY) - आधुनिक समाज म परिवार में नवीन प्रवृत्तियों का आगमन हो रहा है इससे परिवार के संरचना और कार्यों में तेजी से बदलाव आ रहा है, इस प्रकार इस परिवर्तन को मोटे तौर पर दो भागों में

बाँटा जा सकता है। (I) परिवार की संरचना में परिवर्तन और (II) परिवार के कार्यों में परिवर्तन। प्रथम मे परिवार की संरचना का निर्माण की विभिन्न इकाइयों से होने वाले परिवर्तन आते है द्वितीय मे परिवार के कार्यों मे बदलाव आते है।

I. परिवार की संरचना में परिवर्तन — परिवार का संरचना का निर्माण विभिन्न इकाइयों से होता है इनमे मूल रूप से परिवार के आकार-प्रकार सदस्यों के संबंध, प्रस्थितियाँ और भूमिका, अधिकार और कर्तव्य आदि आते हैं इनमें काफी परिवर्तन आ रहे है। फलस्वरूप परिवार की संरचना परिवर्तित हो रही है इन परिवर्तनो को निम्नांकित रूप मे समझा जा सकता है-

1. परिवार के आकार मे ह्रास :- भारतीय परिवार में तीन चार पीढ़ियों के लोग रह करते थे जिनकी संख्या काफी थी किन्तु आज परिवार मे एक या दो पीढ़ी के सदस्य होते है। पति-पत्नि व बच्चों का परिवार आदर्श बन गया। अधिकतर युग्म सास ससुर के साथ रहना पसन्द नही करते। आज एकाकी परिवारों की संख्या में बढ़ोतरी होती जाती है।

2. कर्ता की अधिसत्ता में ह्रास :- भारतीय परिवार में सबसे बड़ा पुरुष कर्ता होता था और उसके आदेश से ही सब कुछ होता था। आज इस प्रवृत्ति में बदलाव आया है एक तरफ आयु की तुलना में योग्यता का महत्व बढ़ा तो दूसरी तरफ किसी चीज का निर्णय मिल-जुलकर करने की प्रवृत्ति का विकास हुआ है। आज कर्ता भी इस तथ्य को स्वीकारते है।

3. महिलाओं की स्थिति में बदलाव :→ भारतीय परिवार में महिलाओं

Page No. 18
Date / 201

की स्थिति काफी निम्न रही। परिवार में उनका शोषण अधिक रहा। आज उनकी स्थिति में बदलाव आया है। आज की महिलाएँ दासी नहीं पति की मित्र व जीवन-साथी मानी जाने लगी। वे घर की चारदीवारी में बंद नहीं रहती, बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों - नौकरी, व्यापार व राजनीति आदि में अग्रसर हो रही है।

4. विवाह व्यवस्था में बदलाव :- विवाह व्यवस्था परिवार का आधार है। भारतीय परिवार में विवाह की प्रक्रिया बूढ़े-बुजुर्गों द्वारा धार्मिक तरीके से किये जाने की व्यवस्था है लेकिन इसमें बदलाव आया है। आज लड़के-लड़कियों के विवाह में उनसे परामर्श करना आम बात है। विवाह की प्रक्रिया धार्मिक की बजाय सामाजिक अधिक हो गई है। विवाह में रोमांस का महत्व बढ़ने लगा है। इस प्रकार परिवार में विवाह के प्रति नवीन प्रवृत्तियाँ उभर रही है।

5. व्यक्तिवादिता :- भारतीय परिवार समूहवादी रहा है। सबके लिए सब और सबके लिए सबका आदर्श रहा है लेकिन आज व्यक्ति सिर्फ अपने-अपने बच्चे और अपनी बीवी के बारे में सोचता व करता है। भाई के परिवार या चाचा-चाची के परिवार के बारे में सोचने की बात नहीं आती। व्यक्तिवादिता परिवार पर हावी हो गयी है इसमें भी किस व्यक्ति की अच्छी स्थिति व अच्छी आमदनी है, चाहे वह परिवार का छोटा सदस्य ही क्यों न हो, पूरा परिवार उस व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमता है।

6. संयुक्तता की धारणा में बदलाव :- भारतीय परिवार का आधार विभिन्न पीढ़ियों के

सदस्यों का एक साथ रहना, एक साथ खाना, सम्पत्ति का एक जगह होना एवं संस्कारों में संयुक्त रूप से भाग लेना आदि था। आज की परिस्थिति में एक तो यह सम्भव नहीं रहा, दूसरा व्यक्ति की व्यक्तिवादिता संयुक्तता पर हावी हो गयी। संयुक्त परिवार में अलग होकर घर बसाना बुरा नहीं माना गया। अब तो यह कहे कि अच्छा माना जाने लगा है।

II परिवार के कार्यों में परिवर्तन :- भारतीय परिवार अनेक कार्यों के माध्यम से समाज का आधार रहा। यह भारत परम्परा रही। इसका इतिहास लगभग तीन हजार वर्षों का है लेकिन आज इनके कार्यों में बदलाव आया है। इसे निम्नांकित रूप मे समझा जा सकता है-

1. आर्थिक कार्यों मे बदलाव :- औद्योगीक क्रांति के पूर्व तक भारतीय परिवार उत्पादन एवं उपभोग दोनों का केन्द्र था। आज परिवार का उत्पादन ~~एवं उपभोग~~ कार्य बड़े-बड़े कारखानों तथा मिलों को हस्तान्तरित हो गया है परिवार मे बहुत कम वस्तुएँ बनाई जाती हैं परिवार के सदस्यों को अपनी आजीविका के लिए अन्य अनेक स्थानों पर काम करना पड़ता है उपभोग की दृष्टि से परिवार का महत्व आज भी है।

2 सामाजिक कार्यो में बदलाव :- भारतीय परिवार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य समाजीकरण से जुड़ा है यद्यपि यह कार्य आज भी परिवार कर रहा है लेकिन सिर्फ पारिवारिक समाजीकरण से ही व्यक्तित्व का निर्माण संभव नहीं है इसलिए ये कार्य अन्य संस्थाओं - स्कूलों, कॉलेजों, खेल समूह

एवं पड़ोस आदि के माध्यम से होने लगा है व्यक्ति की परिस्थिति निर्धारण में परिवार की भूमिका में कमी आई है। व्यक्ति की योग्यता एवं उपलब्धियाँ ही प्रस्थिति का आधार हो गयी हैं इसी तरह नियन्त्रण के क्षेत्र में भी परिवार की शक्ति घटी है व्यक्ति पर नियन्त्रण में राज्य की शक्ति बढ़ी है।

3. धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यों में बदलाव :- भारतीय परिवार धर्म व संस्कृति का रक्षक रहा है। वर्तमान समय मे तर्क व विज्ञान का महत्व बढ़ने से परिवार के सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यों में नवीन प्रवृतियों का विकास हुआ है। यद्यपि पूजा-पाठ एवं अन्य धार्मिक क्रियाएँ आज भी की जा रही हैं, लेकिन उसके उद्देश्य एवं आदर्शों मे बदलाव आया है। रूढ़िवादिता को छोड़ने व नवीनता को स्वीकारने की प्रवृति का विकास हुआ है।

4. शैक्षणिक कार्यों में बदलाव :- आज की शिक्षा का मूल उद्देश्य रोजगार प्राप्त करना है। पारिवारिक शिक्षा इस उद्देश्य को पाने में असमर्थ है शिक्षा प्रदान करने का कार्य मुख्यतया अन्य संस्थाओं - स्कूल, कॉलेज एवं विश्वविद्यालय आदि ने ले लिया है शिक्षा अत्यधिक विशिष्ट हो गई। इसलिए विशिष्ट संस्थाएँ ही इसे प्रदान करती हैं।

5. मनोरंजनात्मक कार्यों में बदलाव :- भारतीय परिवार मनोरंजन का केंद्र रहा, जहाँ बच्चों की प्यारी प्यारी बोली, उनके छोटे दाम्पत्य प्रेम, उत्सव त्यौहार एवं विभिन्न संस्कार आदि मनोरंजन के स्रोत थे। वर्तमान में व्यक्ति इसमे आनंद

नही लेते। फलस्वरूप मनोरंजन से संबंधित कार्य क्लबों, चलचित्रों एवं मित्र मण्डली आदि के माध्यम से पूरा होने लगा। टेलीविजन व कम्प्यूटर का घरों मे प्रवेश होने से नवीन मनोरंजक कार्य परिवार को प्राप्त हो गये हैं।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि भारतीय परिवार की संरचना एवं प्रकार परिवर्तित हो रहे हैं, जिससे परिवार विघटित स्थिति मे है।